कर्बला से हमें क्या सबक़ मिलता है...क़ुर्बानी का?

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची

दुनिया की तारीख़ (History) गवाह है कि हमेशा बदी की ताक़तें उभरती रहीं और इन्सानियत के मिलेजुले फ़ायदे को तबाह व बर्बाद करती रहीं। जब हम लूटमार, ज़ुल्म और सितम और लालच के उन वाक़िओं को देखते हैं, जिनमें सिर्फ़ निजी फ़ायदे के चेहरे पर इन्सानी कामयाबी और जनता के हक़ूक़ की हिफ़ाज़त की नक़ाब डाल कर समाजी गुनाहों को किया गया तो हैरत, ग़म और गुस्से के एक गहरे समन्दर में हम डूबने लगते हैं और ये सोचने लगते हैं कि ज़ोर ज़बरदस्ती और ज़ुल्म और सितम के इन हौलाते तूफ़ानों में इन्सानी ज़िन्दगी क्योंकर अब तक बाक़ी रह सकी और किस तरह ये दुनिया इस वक़्त तक इस क़ाबिल रह गई कि इसमें रहना और जीना मुमकिन है। साथ ही हमारी ये हैरत और परेशानी उस वक़्त बिल्कुल ख़त्म हो जाती है जब हम ये भी देखते हैं कि ऐसे तमाम मौक़ों पर कुछ महान तारीख़ी शख़्सियतें सामने आती हैं और इनमें ग़ैरमामूली गहरी सूझबूझ, पक्के इरादे और काम की क़ुव्वत मौजूद होती है और वह बुराई और गुमराही के तबाही भरे तूफ़ानों और ज़ुल्म और सितम के धारे का रुख़ मोड़ दिया करती हैं और सिसकती हुई इन्सानियत में एक नई रूह फूँक देती हैं।

इन सभी महान शख़्सियतों में जिन्होंने समाजी फ़ायदे की बेहतरी और इन्सानियत की भलाई के लिए काम किया और बदी की दबदबे वाली ताक़तों का मुक़ाबला किया और फिर अपने मक़सद में जीत पायी, ये बात उन सब में एक सी है कि इनमें हर शख़्सियत ने अपने ज़ाती फ़ायदे और निजी सुख आराम को जनता की भलाई और इन्सानी नस्ल के बुनियादी मक़सद और उसके रास्ता दिखाने और कामयाबी के लिए क़ुर्बान कर दिया था। इस महान मक़सद को हासिल करने के लिए उन्होंने जान, माल, और अपनी ज़ात के हर उस फ़ायदे की क़ुर्बानी पेश की जिसका पेश करना उनके लिए मुमकिन था। वह डर और लालच के मुक़ाबले में मज़बूत चटानों की तरह खड़े रहे उन्होंने अपने पक्के इरादे और सच्चाई की बेपनाह ताक़त से और ग़ैबी रहनुमाई के सहारे से कमज़ोर इन्सानों की मदद की और ज़मीर (अन्तःकरण/Conscience) की आज़ादी का वह हक़ जो उनसे ज़बरदस्ती छीन लिया गया था, उन्हें वापस दिलवाया और गुमराह जानों को हर मुमकिन सूरत से रास्ता दिखाया और ये सब इस वजह से कि ख़ुदा ने ये नहीं चाहा कि ये दुनिया एक बदतरीन जगह बन जाए या ये कि इन्सानी नस्ल ऐश की दासी और वह्शी दरिन्दों की नस्ल बन कर रह जाए। ये महान शख़्सियतें इस सच्चाई पर यक़ीन रखती थीं कि इस दुनिया में इन्सान सिर्फ़ मौज मस्ती और खाने पीने के लिए नहीं पैदा हुआ है बल्कि ऊँचे मक़सदों और क़ीमती विचारों की सेवा करना और उनके लिए हर मुमकिन क़ुर्बानी पेश करना उसका सबसे बड़ा फ़र्ज़ है। अगर ऐसे इरादे के पक्के और सच्चे इन्सान न पैदा होते तो यक़ीनन आज भी इन्सानी ज़िन्दगी हूश और जंगली क़ानून की ज़ंजीरों में एक कमज़ोर क़ैदी की हैसियत में होती और इन्सान के ज़मीर की आज़ादी और अपने निजी और समाजी जाएज़

हक़ की तलब को सोच भी नहीं सकता और पूरी दुनिया एक ऐसा जहन्नम बन कर रह जाती जहाँ समाजी और अख़्लाक़ी (Moral) उसूल जंगलीपन के शोलों में जलते रहते।

ऊँचे मक़सद और इन्सानी कामयाबी के पाक काम के लिए जिन तारीख़ी शख़सियतों ने कुर्बानियाँ पेश करके इन्सान को नजात दी, उनमें महान शहीद (सैय्यिदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम) की ज़ात ऐसी मंज़िल पर है जहाँ कुर्बानी और त्याग, ख़िदमत और ईमानदारी के जज़्बे की वह मिसाल बनी जिसकी जैसी पेश करने से तारीख़ के पन्ने बेबस हैं। किसी तारीख़ी शख़सियत की बड़ाई को समझने के लिए हमें इस बात को भी समझना पड़ेगा कि इस मक़सद की हैसियत क्या थी जिसके लिए उसने कुर्बानियाँ पेश कीं और जान, माल और औलाद की बाज़ी लगाई और साथ ही ये कि उसके इस किरदार के नैतिक रुख़ क्या थे। इन बातों को पूरी तरह समझ लेने के बाद हमारी निगाहों में उस शख़सियत की सही बड़ाई समा सकती है और हम उसके असली मक़ाम को जान सकते हैं, वरना नहीं। इस बुन्याद पर अगर हम इमाम हुसैन[अ०] की इस कुर्बानी के नैतिक पहलू और सही मक़ासिद को न समझें तो फिर इस कुर्बानी की इज़्ज़त हमारे सामने दो बादशाहों और दो फौजों की जंग से ज़्यादा नहीं हो सकती। इसलिए हमें पूरी ईमानदारी और सच्चाई से इस हक़ीक़त पर ध्यान करना होगा कि इमाम[अ०] की इस कुर्बानी का सही मक़सद क्या था और इसके नैतिक और इस्लामी पहलू क्या थे। आपने सिर्फ़ अपनी ही जान व माल की कुर्बानी नहीं पेश फ़रमाई बल्कि अपनी औलाद, अपने चाहने वालों, अपने साथियों यहाँ तक कि छः माह के बच्चे हज़रत अली असग़र को भी कर्बला के मैदान में हक़ की आवाज़ को ऊँचा करने और इस्लाम को बचाने के रास्ते में कुर्बान कर दिया, इस बहादुरी और हिम्मत के साथ जो पहले की तरह आज और अब भी अपनी आप ही मिसाल है। इतनी अहम कुर्बानी और ऐसी बड़ी सेवा किस मक़सद के लिए हो सकती है, जबकि आपके लिए बहुत ही आसान बात थी कि आप यज़ीद के हाथ पर बैअत कर लेते (उसके राज को मान लेते) और हर तरह के दुनियावी ऐश आराम को हासिल करने में कामयाब हो जाते मगर आप ने अपने वतन को छोड़ा, ख़ानदान से अलग हुए, रसूल[स०] की पाक क़ब्र से दूरी को गवारा किया और मन व शरीर के हर तरह ज़हनी और जिस्मानी चैन व आराम छोड़कर ख़ून की बारिश और मौत की गरज के सामने औरतों, बच्चों, साथियों, अज़ीज़ों और एक बहुत ही छोटे दल के साथ आ गए, ये ऊँचा मक़सद और बड़ी ग़रज़ सिर्फ़ यही थी कि उस वक़्त आप उसको अपना फ़र्ज़ समझ रहे थे कि इस्लाम की ईमानदारी और सच्चाई की सही सेवा सिर्फ़ यही है कि आप कर्बला की कुर्बानगाह (बेदी) पर अपनी सारी अनमोल कुर्बानियाँ पेश फ़रमा दे और इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिए उस नापाक और बेदीन शासक से एक फ़ैसलाकुन और आख़री जंग करें, वह शासक जो न सिर्फ़ मुसलमानों के ख़लीफ़ा बन जाने की धमकी दे रहा था बल्कि जिसे मुसलमानों का नेता होने का दावा भी था और ईमानदारी के चेहरे पर अपनी नापाक समाजी और सियासी उसूल की नक़ाब डालकर इस्लाम और उसकी रूहानियत को हमेशा के लिए ज़मीन में गाड़ देना चाहता था। 'इस्लाम और ईमानदारी के लिए जंग' का मतलब सिर्फ़ ये था कि इमाम हुसैन[अ०] ने इन्सानियत की भलाई और उसकी सही अगवाई के लिए जंग की थी और उसी ऊँचे मक़सद के लिए कुर्बानियाँ पेश फ़रमायीं। ये कोई सिमटा-घिरा और पार्टी मक़सद न था जो किसी ख़ास ख़ानदान या किसी ख़ास ज़मीन के हिस्से से जुड़ा था, बल्कि ये उसूल की जंग थी, हक़ और बातिल, सत्य और असत्य की लड़ाई थी, ईमानदारी और बेदीनी की जंग थी। ऐसी लड़ाइयाँ जब भी लड़ी गईं तो उनमें जीत और हार की कसौटी वह न था जिसको आम जनता हार और जीत समझते हैं। इन लड़ाईयों में नतीजों और मक़सदों की ऊँचाई और सच्चाई के लेहाज़ से जीत और हार के उसूल बनाए जाते हैं और फिर ये देखा जाता है कि जिस मक़सद के लिए दो गुट आपस में भिड़े हुए थे उसके पाने में कौन सा गुट कामयाब रहा। ये एक मानी हुई सच्चाई है कि अत्याचारी ताक़तों की भूख इतनी बीहड़ हुआ करती है कि वह सारी बुराईयों से अपना

पेट भरती है। यज़ीद भी ज़ुल्म और सितम की पूरी नुमाइन्दगी कर रहा था उसे माद्दी (Material) मूल्यों के पाने में शुरुआती कामयाबियाँ मिल चुकी थीं, उसने सत्ता हड़प ली था, और रिश्वत, नाजाएज़ दबाव, ज़ुल्म और मक्कारी से उसने लोगों से बैअत ले ली थी (अपना राज मनवा लिया था) सिवाए कुछ लोगों के जो इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के साथ थे। ज़ुल्म और सत्ता की न ख़त्म होने वाली भूख ही तो थी जिसकी वजह से उसने अब रसूल[स०] के नवासे के सामने भी बैअत का मसला पेश किया जिसका मतलब साफ था कि आप उसकी सरदारी और सत्ता को दुनियावी और दीनी हैसियतों से मान लें, जिसका नतीजा सिर्फ़ ये था कि इमाम हुसैन[अ०] उन सभी नैतिक और इस्लामी मूल्यों और सारे दीनी ध्यान और हक़ीक़तों को छोड़ दें, जिनके वह अमानतदार थे और जो उन्हें अपनी जान से ज़्यादा अज़ीज़ थीं और इसका दूसरा रुख़ भी बिल्कुल साफ़ था कि अगर ये बात न हो सके तो फिर आप हर उस मुसीबत और आफ़त को झेलें जो मुमकिन हो सकती है। महान इमाम अपने धर्म फ़र्ज़ को पूरी तरह पहचानते थे, वह इस्लाम के उसूल और उसकी सच्चाई के अमानतदार थे, वह इस दौर में इस्लाम की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त इस्लाम के लिए रसूल[स०] के नवासे और इमाम होने की हैसियत से सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदार थे। इसलिए उन्होंने इस बैअत की माँग को ठुकरा दिया, मन की आवाज़ और फ़र्ज़ के एहसास की कड़ाई उनके पक्के इरादे की बुनयाद थी और उन सभी डरावने नतीजों के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा ताक़तवर थी जो हार के बाद दुश्मन दरिन्दों के हाथों जंग के मैदान में बर्दाश्त करना पड़ते हैं। आपने इन्सान जाति को अपनी इस महान क़ुर्बानी से ये बात पूरी तरह समझा दी है कि अपना ज़ाती फ़ायदा, और अज़ीज़ों और दोस्तों या अपनी औलाद और रिश्तेदारों के हित और उनका आराम और राहत, इनमें से कोई चीज़ भी सच्चे उसूल और पाक विचारों के बचाव के मक़सद के सामने किसी तरह का भी मोल नहीं रखती। क्या हिंसा और ज़ुल्म के हाथों में ज़ंजीरें डालने के लिए इमाम हुसैन[अ०] की क़ुर्बानी से ज़्यादा अहम कोई मिसाल मुमकिन हो सकती है? इसका जवाब बिल्कुल साफ़ है कि हरगिज़ नहीं। इस क़ुर्बानी ने बता दिया कि बुराई का मुक़ाबला हर क़ीमत पर किस तरह किया जा सकता है और कुछ लोग टिड्डी दल फ़ौजों के मुक़ाबले में किस तरह ईमानदारी और हक़ की हिमायत (सत्य का साथ) का फ़र्ज़ पूरा कर सकते हैं।



बक़िया ..... अमर शहीदों के सरदार इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

सच हैं और क़यामत के दिन ख़ुदा सबको उठायेगा। उस आने वाली घड़ी में कोई शक नहीं। बातिल के मुक़ाबिल में खड़े होने का मेरा मक़सद मौज मस्ती नहीं है बल्कि मेरा मक़सद उम्मत का सुधार और अपने नाना के समाज को भटकने से बचाना है। मैं चाहता हूँ कि "अच्छाइयों" का हुक्म करूँ और "बुराइयों" से बचाए रखूँ, मैं अपने नाना (हज़रत मुहम्मद[स०]) और अपने पिताश्री (अली[अ०]) के चलन से बंधा हुआ हूँ। इसलिए जो मेरे मक़सद को सच समझ कर मुझे मानें और मेरा साथ दे, तो ख़ुदा उसे सच में वरदान देगा (वह सआदत पाएगा) और जो मुझे ठुकराएगा तो मैं सहन करूँगा यहाँ तक कि ख़ुदा मेरे और लोगों के बीच फ़ैसला करे और वह बेहतरीन फैसला करने वाला है।"

